स्नातक स्तर पर आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के शैक्षिक हित का अध्ययन

जितेन्द्र कुमार
शोध–छात्र
बी.आर.डी.पी.जी.कॉलेज, देवरिया, उ.प्र.
(दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)
E-Mail: jkmnpj121@gmail.com

प्रो. मैथिली रमण प्रसाद सिंह
शिक्षक–शिक्षा विभाग
बी.आर.डी.पी.जी.कॉलेज, देवरिया, उ.प्र.
(दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

प्रस्तुत शोध– पत्र का उद्देश्य स्नातक स्तर पर आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक हितों की जांच करना है और उन कारकों को समझने पर अवधान केंद्रित करना है जो इन दो समूहों के शैक्षिक हितों को प्रभावित करते हैं और अंतर्निहित किसी भी असमानता की पहचान कर सकते हैं। शोध की विषय–वस्तु का व्यापक विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक आंकड़ा संग्रहण विधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष समावेशी शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं के विकास में योगदान कर सकते हैं जो विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं।

मुख्य शब्दः आरक्षित, अनारक्षित, छात्र, शिक्षा नीति।

प्रस्तावनाः

स्नातक स्तर पर आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के बीच शैक्षिक हितों के अध्ययन हेतु उनकी रुचियों के माध्यम से इस बात का पता लगाया जा सकता है कि उनकी शैक्षिक गतिविधियाँ और वरीयताएँ क्या हैं। इन दोनों समूहों के मध्य भेदों और असमानताओं की जाँच करके शोधकर्ता पहुँच, अवसर की उपलब्धता और समर्थन के मामलों में सुधार के लिए किसी भी असमानता और संभावित क्षेत्र की पहचान की जा सकती है। स्नातक स्तर पर आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक हित का अध्ययन करते समय इसके प्रमुख पक्षों को स्पष्ट किया जाना आवश्यक हैः

स्नातक स्तर पर आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक हितः

सामान्यतः इंटरमीडिएट स्तर की शिक्षा के उपरांत महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में प्रवेशित विद्यार्थी को स्नातक स्तर का माना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में इसी अवधारणा को ध्यान में रखा गया है। आरक्षित वर्ग से आशय अध्ययन करने वाले उन विद्यार्थियों से है जो भारत के संविधान के अंतर्गत मान्य निकायों की नीति के अंतर्गत समाज के शैक्षिक तथा आर्थिक रूप से कमजोर अथवा पिछड़े वर्गों से आते हैं और जिनको शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के लिए तथा आगे रोज़गार प्राप्ति में अधिमानता अथवा विशेष अवसर जिसे आरक्षण कहा जाता है, प्राप्त है। इस वर्ग के भी कुछ उपवर्ग हैं जिनमें मुख्यतः अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग सम्मिलित है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को सम्मिलित करते हुए उनको भी शैक्षिक और रोज़गार संबंधी अधिमानता देने का प्रावधान किया गया है जो मूलतः आर्थिक स्तर पर आधारित है।

शैक्षिक हित का तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में उन समस्त प्रकार की गतिविधियों, नीतियों, निर्णयों और वरीयताओं से है जो शिक्षार्थियों के सीखने, विकास और कल्याण को बढ़ाने के लिए आवश्यक होते हैं। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों का शैक्षिक कल्याण और उत्थान, सीखने की गति और क्षमता में सुधार, सर्वांगीण विकास, शैक्षिक आवश्यकताओं की संपूर्ति और शैक्षिक गुणवत्ता का आश्वासन मिलता है।

विस्तृत रूप से स्नातक स्तर पर आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षाएं और रुचियाँ कतिपय भिन्नताओं और समानताओं के साथ शोधकर्ताओं के समक्ष आती हैं। स्नातक स्तर पर आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी अपनी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने और पीढ़ी गत समस्याओं को समाप्त करने के लिए शिक्षा प्राप्त करने में रुचि प्रदर्शित करते हैं। इन विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचियाँ जो उनकी सांस्कृतिक अथवा सामाजिक पृष्ठभूमि के साथ संरेखित हैं, जैसे कि सामाजिक विज्ञान, मानविकी या ऐसे क्षेत्र जो सामाजिक मुद्दों और असमानताओं को सीधे संबोधित करते हैं। इनकी ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की आकांक्षा रोज़गार के अवसर और वित्तीय स्थिरता का कारण बन सकती है। इसके साथ ही अपने समुदाय के विकास तथा सशक्तिकरण में योगदान करने के लिए शैक्षणिक और

अनुसंधान गतिविधियों में रुचि पाई जाती है। इनमे रोल मॉडल बनने और समुदाय के अन्य सदस्यों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरक बनने की चाह भी पाई जाती है।

इसी प्रकार अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के संदर्भ में विचार से स्पष्ट होता है कि इनमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित, व्यवसाय, कला और अन्य विभिन्न क्षेत्र के विषयों में शैक्षणिक हितों की विस्तृत श्रृंखला पाई जाती है। इनमें अकादमिक रूप से उत्कृष्ट बनने और कौशल के अनुरूप कैरियर बनाने की आकांक्षा पाई जाती है, साथ ही अपने से संबंधित क्षेत्र में प्रगति हेतु अनुसंधान और नवाचार में रुचि मिलती है। इनमें अध्ययन के अंतः विषयों और क्षेत्रों का पता लगाने की इच्छा होती है जो जटिल मुद्दों की समग्र समझ को अनुमति देती है। अपने कैरियर की संभावनाओं को आयाम देने के लिए व्यावसायिक विकास और नेटवर्किंग के अवसरों में इनकी रुचि पायी जाती है।

आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक हितों को प्रभावित करने वाले कारकः

आरक्षित और अनारक्षित इन दोनों प्रकार के छात्रों के शैक्षिक हित, कारकों की एक विस्तृत श्रृंखला से प्रभावित हो सकते हैं। ये कारक व्यक्तिगत अनुभवों, सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, व्यक्तिगत आकांक्षाओं एवं वाह्य परिस्थितियों से भिन्न हो सकते हैं। ऐसे कुछ प्रमुख कारक जो आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के शैक्षिक हितों को प्रभावित कर सकते हैं उनका विवरण निम्नलिखित प्रकारों के अंतर्गत सम्मिलित किया जा सकता हैः

सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमिः वर्तमान युग में वित्तीय संसाधनों की प्रधानता स्वतः स्पष्ट है और इसकी कमी अथवा इनकी प्राप्ति में बाधा शैक्षिक हितों को प्रभावित कर सकती है। आर्थिक रूप से कमजोर या वंचित पृष्ठभूमि के छात्र उन क्षेत्रों अथवा व्यवसाय पथों को प्राथमिकता दे सकते हैं जो उच्च कमाई की क्षमता प्रदान करते हों। इस दिशा में परिवार का समर्थन और प्रोत्साहन उन व्यवसायों के संदर्भ में अधिक झुकाव वाला हो सकता है जो अंततः छात्रों के हितों को प्रभावित कर सकता है।

सांस्कृतिक एवं सामाजिक कारकः संस्कृति और समाज न केवल शिक्षा की दशा और दिशा को प्रभावित करते है वरन् उसपर पर्याप्त परिवर्तनकारी प्रभाव भी डालते हैं। सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड, इनसे संबंधित अपेक्षाएं और मूल्य छात्रों के शैक्षिक हितों को प्रभावित कर सकते हैं। आरक्षित छात्रों के संदर्भ में उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है जो

सामाजिक मुद्दों से निकट का संबंध रखते हैं, सामुदायिक विकास में योगदान करते हैं और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को महत्ता देते हैं। इसमें सहपाठी या सहकर्मी का सामाजिक नेटवर्क शैक्षिक रुचियों को आकार देने के साथ उन्हें प्रभावित कर सकता है। इस प्रकार ये कारक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

शैक्षणिक वातावरणः शैक्षणिक वातावरण का एक निश्चित और अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता और शिक्षण अधिगम की उचित व्यवस्था के साथ गुणवत्ता युक्त संस्थानों और संसाधनों तक छात्रों की पहुँच विभिन्न विषयों के संपर्क को प्रभावित कर सकती है और उनकी रुचियों को आकार दे सकती है। यही पर शैक्षिक परामर्शदाताओं का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। ये परामर्शदाता, प्रेरणा स्रोत और संकाय के सदस्य यथा समय उपलब्ध होकर छात्रों के विशिष्ट शैक्षिक दिशाओं और पथों पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते है और उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं।

व्यक्तिगत आकांक्षाएं एवं योग्यताएंः शैक्षिक रुचियाँ अपने आप में स्वतंत्र नहीं होती हैं। इनको आकार देने में व्यक्तिगत रुचि, तल्लीनता और अभिरुचि का योगदान होता है जबकि व्यक्तिगत आकांक्षा और योग्यता में संरेखण का ज्ञान कुछ परीक्षणों के आधार पर निर्धारित होता है। कुछ छात्रों का झुकाव विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित इत्यादि क्षेत्रों में होता है तो अन्य मानविकी, कला अथवा सामाजिक विज्ञान में अपनी रुचि प्रदर्शित करते हैं। यहाँ

अकादमिक उपलब्धियां और चुनौतियां पिछले अनुभवों के साथ मिलकर छात्रों के हितों को प्रभावित कर सकती हैं।

व्यवसायों के अवसर और बाज़ार की माँगः शिक्षा प्राप्त करके व्यवसाय अथवा कैरियर का चयन छात्रों की सर्वोच्च प्राथमिकता होती है। विशिष्ट क्षेत्रों में व्यवसाय और कैरियर की संभावनाएं और अवसर छात्रों के शैक्षिक हितों को प्रभावित कर सकते हैं। यहाँ उच्च माँग वाले क्षेत्र अथवा उभरते उद्योग अधिक रुचि को आकर्षित कर सकते हैं। मुख्य रूप से छात्र उन क्षेत्रों पर विचार कर सकते हैं जो उनकी योग्यता और लक्ष्यों से मेल खाते हैं जिनमें उद्यमिता एवं कौशल, समंकमतीपच, अनुसंधान और सार्वजनिक सेवा सम्मिलित हैं।

व्यक्तिगत प्रेरणाः इसके अंतर्गत व्यक्तिगत अनुभव, प्रेरक व्यक्तियों से मुलाकात या प्रभावशाली आदर्श व्यक्तित्व (रोल मॉडल) के संपर्क में आने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक हितों को आकार

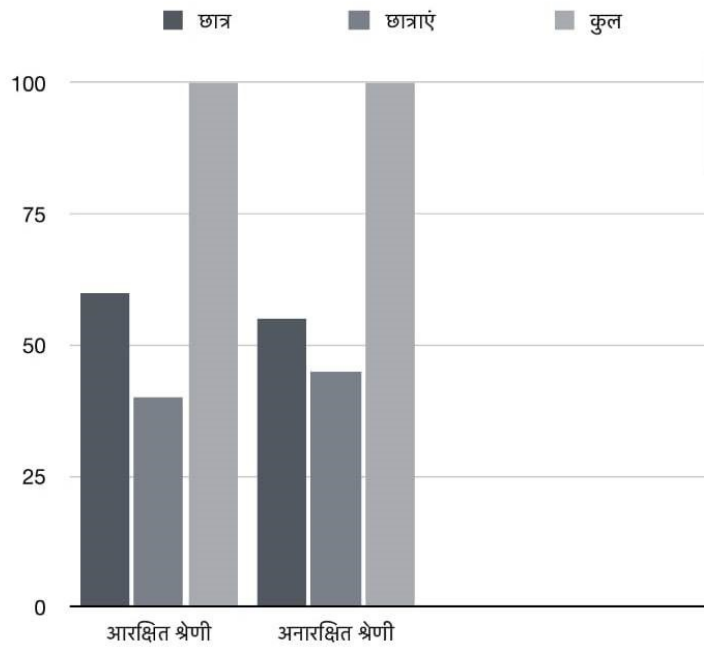
मिलना सम्मिलित है। इसके साथ– साथ व्यक्तिगत आकांक्षाएं, जिनमें समाज में बदलाव लाने अथवा किसी विशिष्ट कारण में योगदान करने की इच्छा सम्मिलित है, शैक्षिक विकल्पों को प्रभावित कर सकती है।

प्रतिदर्श विवरण और आंकड़ों का संग्रहणः वर्तमान अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के 100 उत्तरदाताओं, आरक्षित विद्यार्थियों एवं 100 अनारक्षित विद्यार्थी संभागों का एक प्रतिदर्श (नमूना) लिया गया है। क्षेत्र चयन के लिए बहु चरण प्रतिदर्श तकनीक (मल्टी स्टेज सैंपलिंग टेक्निक) का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों को एक पूर्व–संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया है। माध्यमिक स्तर के आंकड़ों को पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, पुस्तकों, प्रतिवेदनों, सम्मेलन पत्रों, वेबसाइटों के माध्यम से एकत्र किया गया है।

सारणी–1

लिंग	आरक्षित विद्यार्थी	अनारक्षित विद्यार्थी
छात्र	60	55
छात्राएं	40	45
कुल	100	100

चार्ट–1



सारणी–1 एवं चार्ट–1 के अनुसार चयनित आरक्षित श्रेणी के छात्रों की संख्या 60 है जो आरक्षण के नीति से लाभान्वित होते हैं अर्थात् आरक्षण के कतिपय मानदंडों के आधार पर उनको वरीयता दी गई है। इसके साथ 40 छात्राएं चयनित की गई हैं जो आरक्षित श्रेणी के अंतर्गत हैं और आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं की सम्पूर्ण संख्या 100 है।

इसी प्रकार अनारक्षित वर्ग के 55 छात्रों का और 45 छात्राओं का चयन किया गया है और इनकी सम्पूर्ण संख्या भी 100 है।

अब आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के चयनित इन छात्र–छात्राओं की पारिवारिक आय संबंधी स्थिति, अकादमिक प्रदर्शन की स्थिति, आरक्षण नीतियों के संदर्भ में जागरूकता की स्थिति तथा सामाजिक एवं आर्थिक कारकों की स्थिति से (रुचि एवं शैक्षणिक हित के संदर्भ में) स्पष्ट होता है कि ये समस्त कारक प्रभावी हैं।

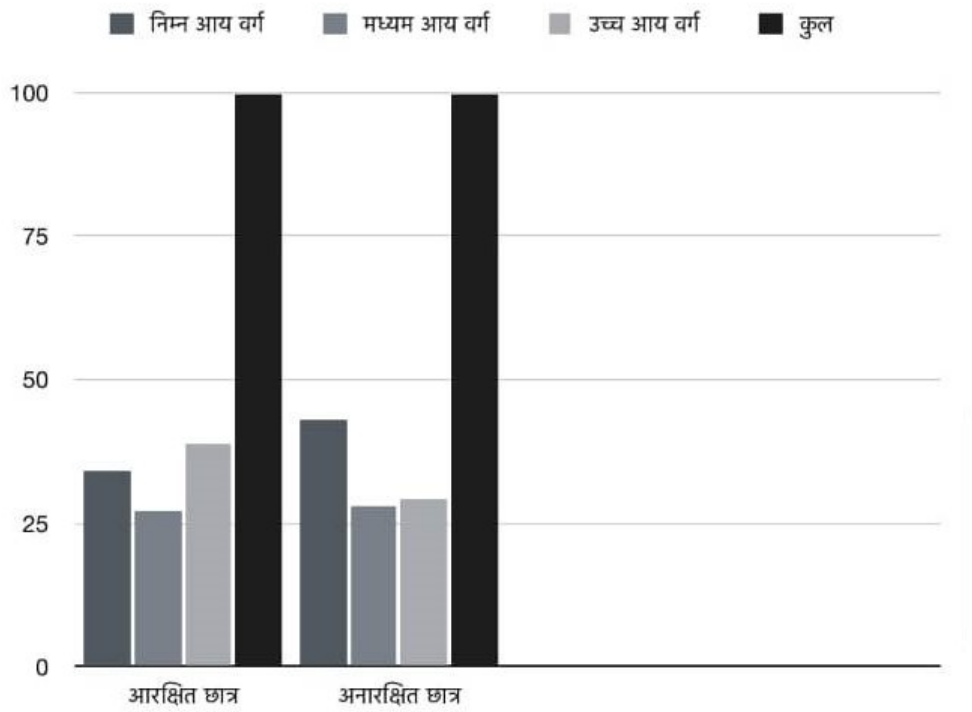
पारिवारिक आय के संदर्भ में विचार करते समय इसे निम्न, मध्यम और उच्च आय वर्ग में विभाजित किया गया है जो सारणी–2 एवं चार्ट–2 के अंतर्गत प्रदर्शित है।

सारणी–2

पारिवारिक आय की स्थिति	आरक्षित विद्यार्थी	अनारक्षित विद्यार्थी
निम्न आय	34	43
मध्यम आय	27	28
उच्च आय	39	29
सम्पूर्ण	100	100

सारणी–2 के अंतर्गत निम्न आय वर्ग के 34, मध्यम आय वर्ग के 27 और उच्च आय वर्ग के 39 आरक्षित वर्ग के छात्रों का चयन किया गया है और अनारक्षित वर्ग के निम्न आय वाले 43, मध्यम आय वर्ग वाले 28 और उच्च आय वर्ग वाले 29 छात्रों का चयन किया गया है जिनकी अलग – अलग सम्पूर्ण संख्या 100 है जो चार्ट संख्या–2 से स्पष्ट है।

चार्ट–2



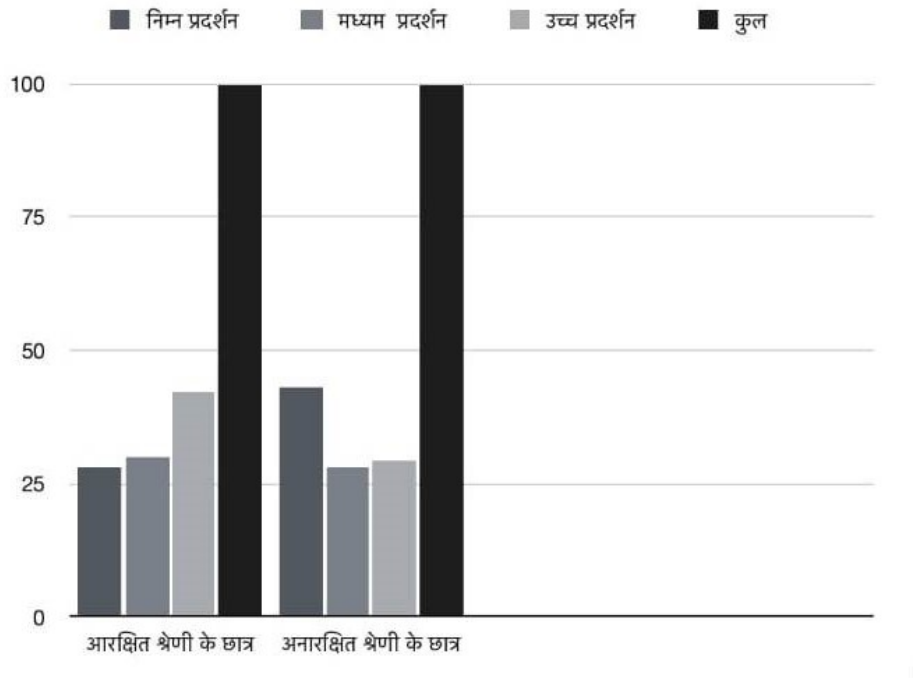
अब आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन के संदर्भ में आंकड़ों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि इस स्तर पर भी इनके मध्य अन्तर पाया जाता है जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारकों पर निर्भर करता है। यह सारणी 3 और चार्ट –3 से स्पष्ट होता है।

सारणी–3

आरक्षित और अनारक्षित छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन	आरक्षित छात्र	अनारक्षित छात्र
निम्न प्रदर्शन	28	43
मध्यम प्रदर्शन	30	28
उच्च प्रदर्शन	42	29
कुल संख्या	**100**	**100**

आरक्षित और अनारक्षित श्रेणी के छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन निम्नलिखित चार्ट संख्या –3 के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

चार्ट–3



आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है जो निम्न, मध्यम और उच्च स्तर से संबंधित है। आरक्षित वर्ग के चयनित, 28 छात्र निम्न, 30 छात्र मध्यम और 42 छात्र उच्च अकादमिक प्रदर्शन करते हैं जबकि, अनारक्षित वर्ग के 43 छात्र निम्न, 28 छात्र मध्यम और 29 छात्र उच्च अकादमिक प्रदर्शन करते हैं।

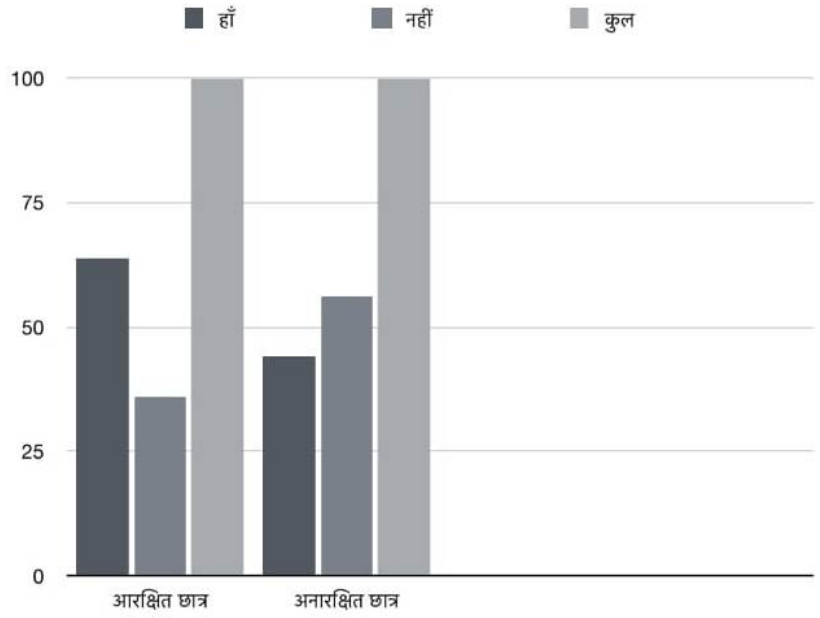
अब आरक्षण की नीतियों के बारे में विस्तृत जागरूकता पर विचार करने पर चयनित आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के संदर्भ में विवरण को सारणी–4 एवं चार्ट–4 के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

सारणी–4

आरक्षण नीतियों के संबंध में विस्तृत जागरूकता	आरक्षित छात्र	अनारक्षित छात्र
हाँ	64	44
नहीं	36	56
कुल	100	100

आरक्षित और अनारक्षित श्रेणी के छात्रों की आरक्षण संबंधी नीतियों के संदर्भ में विस्तृत जागरूकता को चार्ट 4 के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

चार्ट–4



सारणी– 4 एवं चार्ट– 4 के अनुसार आरक्षण की विस्तृत नीतियों के संदर्भ में आरक्षित वर्ग के चयनित 64 छात्रों को इसका ज्ञान है जबकि 36 छात्रों को इसकी विस्तृत जानकारी नहीं है और अनारक्षित वर्ग के चयनित 44 छात्रों को इसकी विस्तृत जानकारी है जबकि 56 छात्रों को इसकी विस्तृत जानकारी नहीं है।

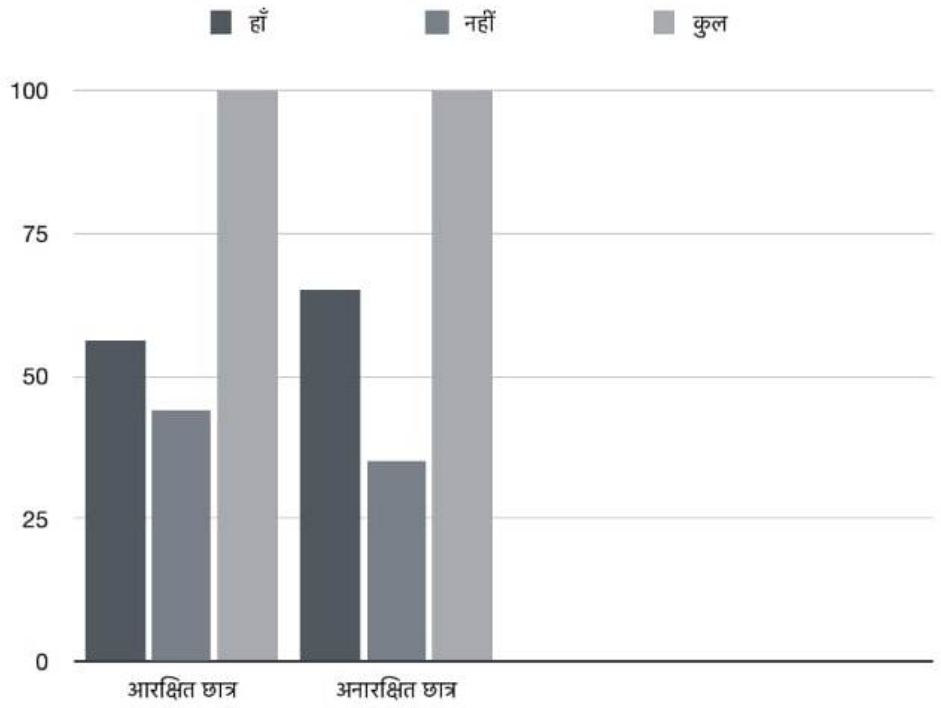
जब सांस्कृतिक एवं सामाजिक कारकों के द्वारा आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्रों की शैक्षिक रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार किया गया तो प्रत्येक वर्ग के 100 छात्रों के

निम्नलिखित सारणी–5 के अनुसार उत्तर प्राप्त हुए जिसको चार्ट 5 के माध्यम से भी स्पष्ट किया गया है।

सारणी–5

सांस्कृतिक एवं सामाजिक कारक शैक्षणिक रुचि को प्रभावित करते हैं	आरक्षित छात्र	अनारक्षित छात्र
हाँ	56	65
नहीं	44	35
कुल	100	100

चार्ट–5



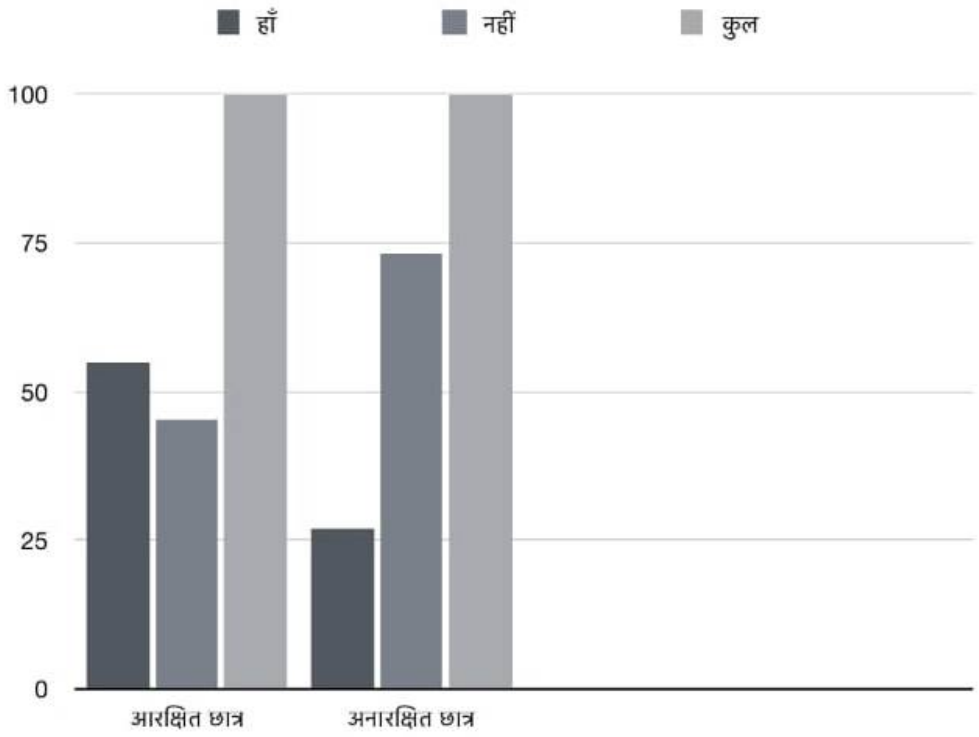
सारणी–5 और चार्ट–5 से स्पष्ट होता है कि आरक्षित वर्ग के 56 छात्रों का मानना है कि सांस्कृतिक एवं सामाजिक कारक उनके शैक्षणिक रुचि को प्रभावित करते हैं, जबकि 44 छात्र ऐसे प्रभाव का अनुभव नहीं करते हैं। इसके विपरीत, अनारक्षित छात्रों में से 65 छात्रों का मानना है कि सांस्कृतिक और सामाजिक कारक उनके शैक्षणिक रुचि को आकार देने में भूमिका निभाते हैं, जबकि 35 छात्र ऐसा नहीं सोचते हैं।

अब सामाजिक–आर्थिक कारकों द्वारा आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के चयनित छात्रों के शैक्षणिक हितों को प्रभावित करने के संदर्भ में प्राप्त उत्तरों को सारणी–6 एवं चार्ट–6 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

सारणी–6

सामाजिक–आर्थिक कारकों का आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के छात्रों के शैक्षणिक हितों पर प्रभाव	आरक्षित छात्र	अनारक्षित छात्र
हाँ	55	27
नहीं	45	73
कुल	100	100

चार्ट–6



सारणी–6 एवं चार्ट–6 से स्पष्ट होता है कि आरक्षित छात्रों में से 55 छात्रों का मानना है कि सामाजिक–आर्थिक कारक उनके शैक्षणिक लाभों को प्रभावित कर सकते हैं जबकि, 45 छात्र इस प्रकार के प्रभाव को महसूस नहीं करते हैं। दूसरी ओर, अनारक्षित छात्रों में से केवल 27 छात्र मानते हैं कि सामाजिक– आर्थिक कारकों का प्रभाव पड़ता है जबकि, 73 छात्र ऐसा नहीं सोचते हैं।

आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के छात्रों के शैक्षणिक हितों पर सामाजिक आर्थिक कारकों के प्रभाव के बारे में धारणाओं में अंतर है। आरक्षित छात्रों के उच्च प्रतिशत का मानना है कि अनारक्षित छात्रों की तुलना में सामाजिक– आर्थिक कारक उनके शैक्षणिक हितों को प्रभावित कर सकते हैं।

निष्कर्ष: प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष के रूप में स्नातक स्तर पर आरक्षित और अनारक्षित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक हितों, उनकी आकांक्षाओं, प्रेरणाओं और वृत्तिक लक्ष्यों के संदर्भ में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। उनके शैक्षिक हितों को प्रभावित करने वाले कारक बहुमुखी

हैं और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक प्रभाव, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और वाह्य परिस्थितियों के आधार पर भिन्न हो सकते हैं। समावेशी शैक्षिक वातावरण निर्मित करने के लिए ऐसे कारकों को समझना आवश्यक है जो विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरित करते हैं। आरक्षित विद्यार्थियों की रुचि उन क्षेत्रों में अधिक प्रदर्शित होती मिली है जो सामाजिक मुद्दों से संबंधित हैं, सामुदायिक विकास में योगदान करते हैं और ऊर्ध्व गतिशीलता के अवसर प्रदान करते हैं। उनकी वृत्तिक आकांक्षाएँ प्रायः उनकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में सुधार लाने और उनके समुदायों पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लक्ष्य के अनुरूप होती हैं। दूसरी ओर, अनारक्षित विद्यार्थियों के पास व्यक्तिगत रूचियों, प्रतिभाओं और बाज़ार की माँग से प्रेरित वृत्तिक आकांक्षाओं की एक विस्तृत श्रृंखला होती है। उनके शैक्षिक हित विभिन्न विषयों में विस्तार पा सकते हैं और उनकी वृत्तिक आकांक्षाएँ, व्यक्तिगत उत्साह कौशलों के साथ लक्ष्यों को प्रतिबिंबित कर सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चव्हाण, पी. एवं एन. जोशी (2019); शैक्षिक आकांक्षाएँ और विकल्पः आरक्षित और अनारक्षित छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन; सामाजिक विज्ञान और प्रबंधन का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 6(3)– 111–118.
2. चौधरी, आर. (2017), आरक्षण नीति और अनुसूचित जातियों का सामाजिक–आर्थिक विकासः असम में एक अनुभवजन्य अध्ययन; द इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल वर्क, 78 (3)– 347–364.
3. चौहान, ए. एवं ए. पुनिया (2017); अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाएंः आरक्षित और अनारक्षित श्रेणी के छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन; इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 7(6)–109–119.
4. जाटव, डी. के. और आर. चक्रवर्ती (2020); शिक्षा और रोज़गार में आरक्षण नीति की भूमिकाः भारत में केंद्रीय विश्वविद्यालयों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों की सामाजिक स्थिति पर एक अध्ययन; जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 11(16)–68–73.
5. कांबले, एम. डी. एवं के. वी. ढाले (2020); आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के बीच कैरियर आकांक्षाओं और कैरियर विकल्पों का तुलनात्मक अध्ययन; हालिया अनुसंधान पहलुओं का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 7 (13)–16–21.
6. माने, ए.आर. एवं एस. पाटिल (2019); आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के बीच कैरियर आकांक्षाओं और कैरियर विकल्पों का तुलनात्मक अध्ययन; इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज, 6(4)–185–192.
7. पणिक्कर, वी.के. (2018) केरल में अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं और कैरियर विकल्पों पर आरक्षण नीति का प्रभाव; जर्नल ऑफ़ एजूकेशनल एंड सोशल रिसर्च, 8(1)–43–53.

8. पाटिल, वी. एवं आर. यशवंत (2018); उच्च शिक्षा में आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के बीच शैक्षिक आकांक्षाओं और कैरियर विकल्पों पर एक तुलनात्मक अध्ययन; इंडियन जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च, 8(2)–56–58.
9. प्रियदर्शिनी एस. एवं आर. रमेश (2021); उच्च शिक्षा में आरक्षित और अनारक्षित छात्रों की कैरियर आकांक्षाओं और कैरियर विकल्पों का तुलनात्मक अध्ययन; भारतीय शिक्षा जर्नल, 47(3)–14–28
10. सिंह, एस. एवं आर. कौर (2021); आरक्षित और अनारक्षित छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाएँ और कैरियर विकल्पः एक तुलनात्मक अध्ययन; मानविकी और सामाजिक विज्ञान जर्नल, 26(3)–123–138